REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2024

भीष्म साहनी और जैनेन्द्र कुमार के कहानी में मानवीय चेतना

डॉ. रमा तिवारी
अतिथि विद्वान, हिन्दी विभाग,
पंडित शंभूनाथ शुक्ला विश्वविद्यालय, शहडोल (म.प्र.)

सारांश –

भीष्म साहनी और जैनेन्द्र कुमार दोनों ही अपने–अपने तरीके से मानवीय चेतना का चित्रण करते हैं। जहाँ भीष्म साहनी ने समाज के बड़े मुद्दों जैसे विभाजन, हिंसा और सामाजिक असमानता के संदर्भ में मानवीय चेतना को प्रस्तुत किया, वहीं जैनेन्द्र कुमार ने व्यक्ति के आंतरिक संघर्षों और मानसिक स्थिति पर ध्यान केंद्रित किया। भीष्म साहनी के लेखन में समाज का प्रभाव और उसके परिणामस्वरूप व्यक्ति का मानसिक और भावनात्मक संघर्ष प्रमुख होता है। जैनेन्द्र कुमार की कहानियाँ अधिकतर व्यक्ति की मानसिक स्थिति, आत्म–संवाद और उसकी आंतरिक स्थिति पर आधारित होती हैं। दोनों ही लेखक यह दर्शाते हैं कि साहित्य के माध्यम से मानवीय चेतना को उसकी गहराई, जटिलता और विविधता में समझा जा सकता है, और उनके पात्र अपने–अपने जीवन के संघर्षों में इन पहलुओं को तलाशते हैं।

मुख्य शब्द – भीष्म साहनी, जैनेन्द्र कुमार, जीवन के संघर्ष एवं मानवीय चेतना।

प्रस्तावना –

भीष्म साहनी और जैनेन्द्र कुमार दोनों ही हिंदी साहित्य के महत्वपूर्ण कहानीकार रहे हैं और दोनों ने अपनी कहानियों में मानवीय चेतना को गहरे तरीके से प्रस्तुत किया है। इन दोनों लेखकों की कृतियों में समाज, मनोविज्ञान और व्यक्ति के भीतर की संवेदनाओं का अद्भुत चित्रण मिलता है। भीष्म साहनी की कहानियाँ आमतौर पर समाज के विभिन्न पहलुओं, विशेष रूप से विभाजन और उससे जुड़ी मानसिक और सामाजिक समस्याओं पर आधारित होती हैं। उनकी लेखनी में मानवीय चेतना की गहरी समझ देखने को मिलती है। उनके पात्र आम जीवन से जुड़ी समस्याओं और पीड़ाओं से जूझते हुए समाज के अन्याय और असमानताओं से मुठभेड़ करते हैं। भीष्म साहनी की कहानियों में व्यक्ति के भीतर के संघर्ष और मनोविज्ञान को समझने की कोशिश की जाती है। जैसे कि उनकी प्रसिद्ध कहानी 'तमस' में उन्होंने विभाजन के समय की मानसिक पीड़ा और विभाजन के बाद के समाज में उत्पन्न हुई घृणा और असहमति को बारीकी से चित्रित किया। उनके पात्रों की संवेदनाओं में गहरी मानवीयता और भावनाओं की जटिलता दिखती है।

जैनेन्द्र कुमार की कहानियों में मानवीय चेतना का प्रमुख रूप से मानसिक और भावनात्मक दृष्टिकोण से विश्लेषण किया गया है। वे मनुष्य के अंतरद्वंद्वों और उसकी जटिल मानसिक स्थिति को बहुत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करते हैं। उनके पात्र अपने व्यक्तिगत अनुभवों और आंतरिक संघर्षों से जूझते हुए एक नई जीवन दृष्टि की तलाश करते हैं। जैनेन्द्र की कहानियाँ न केवल बाहरी परिस्थितियों का चित्रण करती हैं, बल्कि वे

मानवीय आंतरिक संसार, उसके सवालों और आस्थाओं को भी पूरी गहराई से उकेरती हैं। उनकी प्रसिद्ध कहानी 'रचनात्मकता' में भी उन्होंने मानव चेतना के रचनात्मक पहलू को उजागर किया है, जहाँ वे यह दिखाते हैं कि किस तरह एक व्यक्ति अपनी मानसिक और भावनात्मक स्थिति के भीतर से एक नई दिशा में सोचने और महसूस करने की कोशिश करता है।

भीष्म साहनी और जैनेन्द्र कुमार दोनों ही लेखक समाज के संघर्षों और मनुष्य की जटिलताओं को अपनी कहानियों में प्रस्तुत करते हैं। इन दोनों की लेखनी में मानवीय चेतना का गहरा चित्रण किया गया है, जहाँ व्यक्ति अपने आंतरिक विचारों, इच्छाओं और संघर्षों से जूझते हुए जीवन की सच्चाई का सामना करता है। भीष्म साहनी ने अपनी कहानियों में समाज के बड़े मुद्दों जैसे युद्ध, हिंसा और सामाजिक अन्याय की कड़वी सच्चाइयों को दिखाया, जबकि जैनेन्द्र कुमार ने व्यक्ति की आंतरिक मानसिक स्थिति और व्यक्तिगत संकटों को ध्यान में रखते हुए अपनी कहानियों को आकार दिया। दोनों ही लेखक मानवीय अनुभव को उसकी पूरी गहराई और विविधता में पेश करने में सफल रहे हैं।

विश्लेषण –

प्रेमचन्द–युग के अन्य कहानीकारों में भी यथार्थ के प्रति किसी न किसी प्रकार समसामयिक प्रतिबद्धता अवश्य मिलती है। जयशंकर प्रसाद की कहानी 'मधुवा' जैसी कहानियों में उनका कलाकार यथार्थ की ओर झुका है। 'मधुवा' कहानी में अभिव्यक्त शराबी का अंतः संघर्ष यथार्थ की भूमि पर चित्रित होने के साथ–साथ हिन्दी कहानी में मनोवैज्ञानिक चरित्र चित्रण का सबल शुभारम्भ भी है। जैनेन्द्र ने इस मनोवैज्ञानिक चरित्र चित्रण को अपनी कहानी द्वारा मनोविश्लेषणात्मक चरित्र चित्रण की कोटि में पहुँचाया। इलाचंद जोशी और अज्ञेय ने जैनेन्द्र की इसी परम्परा का अनुसरण किया। इलाचंद जोशी के पात्र तो किसी मनोविश्लेषण की समस्या के लिए ही गढ़े गये हैं। 'रोज शेवा और देव', 'कोठरी की बात', 'पठार का धीरज', 'साँप मेजर', 'चौधरी की वापसी' आदि कहानियों में परिस्थितियों के तीव्र संधान से मन की अनुभूतियों का सूक्ष्म और सशक्त अंकन हुआ है। इस प्रकार जैनेन्द्र, जोशी और अज्ञेय की कहानियाँ मन के यथार्थ की कहानियाँ कही जा सकती है। मन के यथार्थ में रमती कहानी को पुनः समाज के सामाजिक, समसामयिक समस्याओं के संपृक्त करने का श्रेय यशपाल की है। यद्यपि यशपाल की सामाजिक चेतना मार्क्स दर्शन से प्रतिबद्ध है, तो भी उनकी कहानियाँ विभिन्न सामाजिक समस्याओं पर बड़ी प्रखरता से विचार करती हैं। आगे इसी परम्परा का निर्वाह उपेन्द्रनाथ अश्क की कहानियों में दिखाई देता है। चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, विष्णु प्रभाकर, रांगेय राघव, पहाड़ी, अमृतलाल नागर, भगवती चरण वर्मा, भीष्म साहनी आदि कहानीकारों ने स्वातंत्र्य पूर्व की हिन्दी कहानी में यथार्थ का अपने–अपने ढंग से विस्तार किया।

एक श्रेष्ठ साहित्यकार अपनी रचनाओं में जहाँ अपनी भावात्मक और वैचारिक अनुभूतियों को अभिव्यक्ति देता है। वहाँ वह अपने जीवन दर्शन को भी अभिव्यक्त करता है। उन्होंने यह स्पष्ट कहा है, ''साहित्य के क्षेत्र में मेरे अनुभव वैसे ही सपाट और सीधे–सादे ही रहे जैसे जीवन में।''[1] भीष्म साहनी उन लेखकों में से एक हैं जो एक अर्से से लगातार लिख रहे हैं और उस लिखे हुए सवालों से जुड़े रहे हैं। उनके समस्त साहित्य के माध्यम से उनका जीवन दर्शन ही व्यक्त होता है। दार्शनिक स्तर पर वे प्रगतिशील विचारों के हैं। सामाजिक चेतना और दायित्व उनकी हर रचना में व्याप्त है। अपने जीवन दर्शन में भी यह रचनाकार प्रतिबद्ध और ईमानदार हैं।

जीवन के प्रति दृष्टिकोण के विषय में भीष्म जी के एक मित्र ने जो कहा है वह बिल्कुल ठीक है। वे कहते हैं कि जीने के स्तर पर भीष्म जी के पास एक साफ सुथरा, सुरक्षित मजबूत चौखटा है। भीष्म जी ने समूचे लेखन और काफी हद तक जीवन दृष्टिकोण को भी प्रभावित किया है। उनकी अपनी राजनीतिक आस्थाएँ हैं। 'इंटलेक्चुअल कमिंटमेंट' है। भीष्म जी को अपने साथियों से ज्यादा सुविधा और समग्रता जिंदगी में मिली है।

भीष्म जी का समस्त साहित्य ही भारतीय के सुख–दुःख में शामिल होने का अनुभव है। अपने प्रगतिशील विचारों और मार्क्सवादी जीवन दृष्टिकोण के कारण वे सदा ही मेहनत करने वाले वर्ग और शोषण की शिकार जनता के साथ ही खड़े रहे। वे उन तमाम लोगों से जुड़े हुए हैं जो जीवन से संघर्ष करते हुए जी रहे हैं। उनकी कहानियों को पढ़कर स्पष्ट होता है कि वे गहरे रूप में रचनात्मक दायित्व बोध को स्वीकार करते हैं। इसलिए वे ऐसे यथार्थ के प्रति प्रतिबद्ध हैं जो सक्रिय और प्राणवान है।

इस संदर्भ में कपिल तिवारी का यह कथन उल्लेखनीय है, ''भीष्म साहनी ने एक भोक्ता की हैसियत से विभाजन के दुर्भाग्यपूर्ण खूनी इतिहास को जिया है। इसलिए उनके सम्पूर्ण कलात्मक रचाव में वही समय जैसे फिर जिंदा हो जाता है। स्मृति के एक झटके में जैसे फिर वह इतिहास स्पंदित होने लगता है और धीरे–धीरे उसकी चेतना में कोई नासूर रिसने लगता है।''[2] समकालीन जीवन की विडम्बनाओं और विसंगतियों को उन्होंने महसूस किया है। उनकी कहानियाँ किसी खास घेरे में कभी रही नहीं। गहरे में बंधकर रहने की लाचारी से वे मुक्त हैं। एक प्रामाणिक रचनाकार की दृष्टि से वे निरंतर यथार्थग्रही दृष्टिकोण के साथ सजग रहते हैं। भीष्म साहनी को पढ़ने का अर्थ है अपनी जाति और देश की वास्तविक पीड़ा में शामिल होना।

डॉ. गोपाल राय के शब्दों में, "इस काल (1961–75) में कहानीकारों की कई पीढ़ियाँ सक्रिय रहीं। पहली पीढ़ी में उपेन्द्रनाथ अश्क, जैनेन्द्र, विष्णु प्रभाकर, यशपाल, पहाड़ी, निर्गुण आदि कथाकार परिगणनीय हैं। वय की दृष्टि से इनसे कनिष्ठ अमृतलाल नागर, भैरवप्रसाद गुप्त, लक्ष्मी के चन्द्रकिरण सौनरेक्सा, अमृतराय आदि भी रचना–कर्म के आरम्भ की दृष्टि से इसी वर्ग में आते हैं। इन सभी कहानीकारों ने अपने अस्तित्व के लिए अन्तिम संघर्ष करते हुए औपनिवेशिक शासन से लेकर आजाद भारत के नेहरू युग को देखा था। ये सभी कहानीकार मध्यवर्ग से सम्बद्ध थे और गाँधी–नेहरू के नैतिक मूल्यों से परिचालित आदर्शों से गुजरते हुए यहाँ तक पहुँचे थे।"[3]

'कहानी' के स्वीकृत रूप की दृष्टि से जैनेन्द्र का कहानीकार पाँचवे दशक में ही अपनी सम्भावनाएँ समाप्त कर चुका था। चाहे जिस कारण भी जैनेन्द्र ने कहानीकार के रूप में अपनी उपस्थिति बनाये रखने का निर्णय किया हो, कहानीकारों की नयी पीढ़ी ने उन्हें अस्वीकार कर दिया था और वे 'कहानी' को नये ढंग से परिभाषित कर अपनी उपस्थिति सिद्ध करने में जुटे हुए थे।

जैनेन्द्र ने सदी के चौथे दशक में, अपनी कहानियों के माध्यम से, प्रेम का एक दर्शन और स्त्री पुरुष–सम्बन्ध का एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया था। उनकी साठोत्तरी कहानियों में वही प्रेम–दर्शन और वही सम्बन्ध–स्वरूप केवल भाषा और कथन–भंगिमा के हेरफेर से सामने आता है। 'प्रणय–दंश', 'अमिया, तुम चुप क्यों हो गयी', 'झमेला', 'दिन, रात और सवेरा', 'निःशेष', 'बेकार', 'यथावत', 'ये दो', 'विच्छेद', 'वे दो' आदि कहानियों में यह बात देखी जा सकती है।

जैनेन्द्र की कहानी 'महामहिम', 'मुक्त प्रयोग', 'कष्ट', 'बेकार', 'जीना–मरना', 'चक्कर सदाचार का' और 'विक्षेप' ऐसी भी हैं, जिनका कथ्य, जैनेन्द्रीय लीक से हटकर, प्रेम या दाम्पत्य जीवन का परस्पर सम्बन्ध या द्वन्द्व नहीं है। 'महामहिम' एक राष्ट्राध्यक्ष के सामान्य आदमी की मनोभूमि में आने की संवेदना की कहानी है, जो संवेदना के सम्प्रेषण की दृष्टि से अच्छी कहानी कही जा सकती है।

जैनेन्द्र और भीष्म साहनी की साठोत्तरी कहानियाँ हमें संवेदित नहीं करतीं, बल्कि विचारों से थका देती हैं। वे हमें सोचने के लिए विवश कर सकती हैं, पर संवेदना के माध्यम से नहीं, प्रवचन के माध्यम से। जैनेन्द्र इसमें संकोच भी नहीं करते। उनकी बहुत सी कहानियाँ कथ्य की दृष्टि से इतनी अस्पष्ट हैं कि वे पाठकों के लिए पहेली सिद्ध होती हैं। 'उर्वशी', 'वह सूफी', 'कहानी' आदि कहानियाँ ऐसी हैं। पर जहाँ संवेदना पर विचारों का बोझ नहीं होता वहाँ जैनेन्द्र की कहानियाँ प्रभावित करती हैं।

निम्नवर्ग के प्रति कोई सामाजिक प्रतिबद्धता जैनेन्द्र की कहानियों में कहीं नहीं मिलती। वस्तुतः वे मध्यवर्ग के उस हिस्से का प्रतिनिधित्व करते हैं जो अपने सुरक्षा कवच से बाहर नहीं निकलना चाहता। उनकी आरम्भिक कहानी 'अपना–अपना भाग्य' इसका संकेत कर देती है। इस दशक की कुछ कहानियों में – 'क्रान्तिकर्म', 'वह क्षण' आदि–निम्नवर्ग के पात्र आते तो अवश्य हैं, पर उनकी निर्धनता, विवशता आदि हमें आन्दोलित नहीं करती। समाज में आर्थिक समानता के समाजवादी दर्शन से तो उन्हें चिढ़ सी है। 'वह क्षण' में जैनेन्द्र ने समाजवादी विचारधारा वाले एक युवक को अपने परम्परावादी विचारधारा वाले पिता के समक्ष घुटने टेकते दिखाया है। 'क्रान्ति–कर्म' कहानी में कुछ युवक समाज में क्रान्ति करना चाहते हैं। पर कहानी का बुजुर्ग बुद्धिजीवी उन्हें 'महाक्रान्ति' करने का उपदेश देता है और उसकी नजर में 'महाक्रान्ति' इस बात में हैं कि 'पड़ोसी को आप अपने से पहले मानें।' जैनेन्द्र का विश्वास है कि निम्न तबके के लोगों के जीवन में कोई अभाव और कष्ट नहीं, बल्कि 'आनन्द' और 'ठिठोली' है। ''बेचारे उसी को रस मानते हैं। सभ्यता वाले रस को नहीं जानते।'' इस कहानी में भी विचारों का घटाटोप ही है। दिहाड़ी पर काम करने वाले मजदूरों के प्रति इसमें एक प्रकार की बौद्धिक सहानुभूति है जो बहुत खोखली प्रतीत होती है। निम्न वर्ग के प्रति जैनेन्द्र की यह

असंवेदनशीलता खटकने वाली है। प्रेमचन्द और जैनेन्द्र का यही मुख्य अन्तर है। इन कहानियों में जैनेन्द्र की सोच की जड़ता उजागर हुई है।

भीष्म साहनी की कहानियों का एक संग्रह भटकती राख 1966 में प्रकाशित हुआ था, जिसकी कुछ कहानियाँ 1957–60 की भी हो सकती हैं। इसी प्रकार क्रमशः 1973 और 1978 में प्रकाशित कहानी–संग्रह पटरियाँ और वाड़चू की अधिकतर कहानियों का रचना–काल 1966–1975 सम्भावित है। इन संकलनों में भीष्म जी की लगभग 43 कहानियाँ संकलित हैं जिनमें 'अपने–अपने बच्चे', 'इमला', 'खून का रिश्ता', 'गीता सहस्सर नाम', 'नयी नवेली', 'पास फेल', 'भटकती राख', 'साये', 'सिफारिशी चिट्ठी', 'सिर का सदका', 'मालिक का बन्दा', 'साग मीट', 'अमृतसर आ गया हैं, 'डोरे', 'मौकापरस्त', 'पिकनिक', 'राधा–अनुराधा', 'वाड़चू आदि संवेदना की गहराई अथवा कथ्य की प्रासंगिकता के कारण कमोबेश अच्छी कहानियाँ कही जा सकती हैं। इन कहानियों का कथ्य अधिकतर पहाड़ी क्षेत्र के हाशिए पर स्थित समाज निम्न, मध्यवर्ग और समकालीन आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक व्यवस्था से जुड़ा है।

शोषित समुदाय के प्रति सहानुभूति और वर्ग–संघर्ष की भावना से ये कहानियाँ शक्ति प्राप्त करती हैं। इन कहानियों के पात्र 'व्यक्ति' होकर भी अपने वर्ग का प्रतिनिधित्त्व करते हैं। 'अपने–अपने बच्चे' गहरी संवेदना से भरी कहानी है। इसका केन्द्रीय पात्र एक आया का बच्चा है। यह कहानी वर्गभेद को गहरी संवेदना के साथ उभारती है। 'खून का रिश्ता' बदलते मानवीय सम्बन्धों की कहानी है।

भीष्म साहनी अपनी कहानियों में ब्रिटिशकालीन अफसरों और युवकों की मानसिकता का अंकन बहुत सूक्ष्मतापूर्वक करते हैं। 'कुछ और साल' में सरकारी अफसरों की जिन्दगी के दो चित्र प्रस्तुत किये गये हैं, एक, जिसमें वह अपने ऊँचे अफसरों को छोड़कर सारी दुनिया की उपेक्षा करता है और दो, जिसमें उसके रिटायर हो जाने पर सारी दुनिया उसकी उपेक्षा करने लगती है। व्यंग्य की धार इस कहानी को प्रभावी बनाती है। 'ढोलक' में तथाकथित आधुनिक युवकों की मानसिकता पर व्यंग्य किया गया है। आधुनिकता के प्रभाव में युवक पुराने रीति–रिवाजों को अस्वीकार करते हैं, पर ज्यों ही कोई यूरोप वासी उनमें रुचि लेने लगता है, वे भी उन्हें गौरव की चीज समझने लगते हैं। 'चीफ की दावत' में भी यह कथ्य प्रकारान्तर से आया था।[4]

भीष्म साहनी और जैनेन्द्र मुख्य रूप से मध्य वर्ग के जीवन का चित्रण करने वाले कहानीकार हैं। भीष्म साहनी इस दशक की अपनी जिन कहानियों के लिए के लिए याद किये जा सकते हैं, उनमें 'अपने–अपने बच्चे', 'खून का रिश्ता', 'गीता सहस्सर नाम', 'इमला', 'अमृतसर आ गया है', 'वाड़चू' आदि हैं।

भीष्म साहनी अपने युग के एक ऐसे रचनाकार रहे हैं जिनका समाज के प्रति दृष्टिकोण बड़ा स्वस्थ और स्पष्ट रहा है। मूलतः समाजवादी चेतना से जुड़े रहने के कारण समाज के प्रति उनकी दृष्टि प्रगतिशील रही है। यही कारण है कि समाजवाद की समष्टि चिंतनधारा के प्रमुख कहानीकार के रूप में भीष्म साहनी का नाम एक सशक्त कथाकार के रूप में उभरता है। उनकी कहानियों में जन–सामान्य का जीवन और अंतर्विरोध बड़े सशक्त रूप में अभिव्यक्त हुआ है। डॉ. किरण बाला के शब्दों में, ''वर्गीय अंतर्विरोधों की त्रासदी से छटपटाते हुए व्यापक जनसमूह की संवेदनाओं को कहानीकार के रूप में उजागर कर देने में साहनी सिद्धहस्त हैं।''[5] एक प्रगतिशील यथार्थवादी कहानीकार के रूप में उनका समाज के प्रति दृष्टिकोण विकसित हुआ है और उन्होंने प्रगतिशील परम्परा को सार्थक भी बनाया है। उनका दृष्टिकोण मानवतावादी है।

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भीष्म साहनी ने कभी भी किसी वर्ग विशेष की जीवन पद्धति या संस्कृति की खिल्ली नहीं उड़ाई है। उन्होंने उन्हीं मूल्यों की स्थापना की है जिनके प्रति उनके मन में आस्था है। भीष्म जी ने कथा साहित्य में भारतीय समाज की जिजीविषा को स्पष्ट किया है और साथ ही सांस्कृतिक प्रदूषण को मिटाने का अति महत्वपूर्ण कार्य किया है। जीवन की वास्तविकता को ठोस रूप में प्रस्तुत करने में वे सफल रहे हैं। भीष्म साहनी और जैनेन्द्र कुमार दोनों ही हिंदी कहानी लेखन के महान लेखक हैं, जिन्होंने अपनी कृ तियों के माध्यम से मानवीय चेतना का गहरा और संवेदनशील चित्रण किया है। उनके लेखन में समाज और व्यक्ति के भीतर के द्वंद्वों, संघर्षों और मानसिक स्थितियों को बारीकी से उजागर किया गया है। भीष्म साहनी की कहानियाँ विशेष रूप से समाज के बड़े मुद्दों, जैसे विभाजन, हिंसा और सामाजिक असमानताओं पर आधारित होती हैं। उनका लेखन यह दर्शाता है कि समाज में व्याप्त अन्याय और असहमति के कारण व्यक्ति का आंतरिक

संघर्ष कितना जटिल हो सकता है। उन्होंने अपनी कृतियों में मानवीय संवेदनाओं, जैसे घृणा, प्रेम, और अपराधबोध को उजागर किया है। जैनेन्द्र कुमार की कहानियाँ व्यक्ति के आंतरिक मनोविज्ञान, मानसिक स्थिति और व्यक्तिगत संघर्षों को अधिक प्रमुखता देती हैं। उनके पात्र अपने मानसिक द्वंद्व, आत्म–विश्लेषण और आंतरिक संघर्षों के बीच एक संतुलन खोजने की कोशिश करते हैं। जैनेन्द्र के लेखन में मानसिक और भावनात्मक गहराई का चित्रण बहुत प्रभावशाली तरीके से किया गया है। कुल मिलाकर, दोनों लेखकों ने मानवीय चेतना को अपनी कहानियों के माध्यम से अलग–अलग दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। भीष्म साहनी ने बाहरी सामाजिक दबावों को और जैनेन्द्र कुमार ने आंतरिक मानसिक द्वंद्वों को मुख्य रूप से चित्रित किया है। इन दोनों के लेखन में यह साफ दिखाई देता है कि मानवीय अनुभव और संवेदनाएँ न केवल बाहरी समाज से प्रभावित होती हैं, बल्कि व्यक्ति के आंतरिक संघर्ष भी उन्हें प्रभावित करते हैं।

संदर्भ –

[1] भीष्म साहनी – अपनी बात, पृष्ठ 26
[2] संपादक राजेश्वर सक्सेना – भीष्म साहनी व्यक्ति और रचना, पृष्ठ 110
[3] गोपालराय – हिन्दी कहानी का इतिहास, भाग–2, पृष्ठ 192
[4] गोपालराय – हिन्दी कहानी का इतिहास, भाग–2, पृष्ठ 215
[5] डॉ. किरण बाला – समकालीन हिन्दी और समाजवादी चेतना, पृष्ठ 29